चिन्मूरत दृग्धारी की मोहि,...

(कविवर पण्डितश्री दौलतरामजी)

चिन्मूरत दृग्धारी[१] की मोहि, रीति लगत है अटापटी ॥टेक॥
बाहिर नारकीकृत दुःख भोगै, अन्तर सुखरस गटागटी।
रमत अनेक सुरनि[२] संग पै तिस, परनतितैं नित हटाहटी ॥1॥
ज्ञान-विराग शक्ति तैं विधिफल, भोगत पै विधि घटाघटी।
सदननिवासी[३] तदपि उदासी, तातैं आस्रव छटाछटी ॥2॥
जे भवहेतु अबुधके[४] ते तस, करत बन्ध की झटाझटी।
नारक पशु तिय[५] षंढ[६] विकलत्रय[७], प्रकृतिनकी[८] ह्वैं कटाकटी ॥3॥
संयम धर न सकै पै संयम, धारन की उर चटाचटी।
तासु सुयश[९] गुन की 'दौलत' के, लगी रहै नित रटारटी ॥4॥

१. सम्यग्दृष्टि; २. देवियों; ३. गृहवासी; ४. अज्ञानी; ५. स्त्री; ६. नपुंसक; ७. द्वीन्द्रिय, त्रीइन्द्रिय, चौन्द्रिय; ८. गतिकर्म; ९. प्रसिद्धि